



11075CH02

द्वितीयः पाठः

## सौवर्णो नकुलः

प्रस्तुत पाठ महर्षि व्यास विरचित महाभारत के आश्वमेधिक पर्व (अध्याय 91-93) से सङ्कलित है। महाभारत के युद्ध के अनन्तर महाराज युधिष्ठिर अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करते हैं। यज्ञ के सम्पन्न होने पर एक नकुल (नेवला) यज्ञभूमि में आता है, जिसका आधा शरीर सोने का है। वह यज्ञभूमि में उपस्थित याज्ञिकों से कहता है कि यह अश्वमेध यज्ञ भी उस ब्राह्मण के सत्कुप्रस्थ यज्ञ के तुल्य नहीं है, जिसमें मेरा आधा शरीर स्वर्णमय हो गया था। उस नकुल की ऐसी आश्चर्यजनक वार्ता को सुनकर याज्ञिकों द्वारा सत्कुप्रस्थ यज्ञ के विषय में जिज्ञासा करने पर नकुल याज्ञिकों के समक्ष प्रस्तुत कथा को सुनाता है।



श्रूयतां राजशार्दूल महदाश्चर्यमुत्तमम्।  
अश्वमेधे महायज्ञे निवृत्ते यदभूद्विभो!॥१॥

बिलान्निष्क्रम्य नकुलो रुक्मपाश्वस्तदानघः।  
मानुषं वचनं प्राह धृष्टो बिलशयो महान्॥2॥

सक्तुप्रस्थेन वो नायं यज्ञस्तुल्यो नराधिपाः।  
उञ्छवृत्तेर्वदान्यस्य कुरुक्षेत्रनिवासिनः॥3॥

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे धर्मज्ञैर्बहुभिर्वृते।  
उञ्छवृत्तिर्द्विजः कश्चित्कापोतिरभवत्पुरा॥4॥

सभार्यः सह पुत्रेण सस्नुषस्तपसि स्थितः।  
बभूव शुक्लवृत्तः स धर्मात्मा नियतेन्द्रियः॥5॥

षष्ठे काले कदाचिच्च तस्याहारो न विद्यते॥  
भुङ्क्तेऽन्यस्मिन्कदाचित्स षष्ठे काले द्विजोत्तमः॥6॥

कपोतधर्मिणस्तस्य दुर्भिक्षे सति दारुणे।  
क्षीणौषधिसमवायो द्रव्यहीनोऽभवत्तदा॥7॥

अथ षष्ठे गते काले यवप्रस्थमुपार्जयत्।  
यवप्रस्थं च ते सक्तूनकुर्वन्त तपस्विनः॥8॥

कृतजप्याह्निकास्ते तु हुत्वा वह्निं यथाविधि।  
कुडवं कुडवं सर्वे व्यभजन्त तपस्विनः॥9॥

अथागच्छद्द्विजः कश्चिदतिथिर्भुञ्जतां तदा।  
ते तं दृष्ट्वातिथिं तत्र प्रहृष्टमनसोऽभवन्॥10॥

कुटीं प्रवेशयामासुः क्षुधार्तमतिथिं तदा।  
इदमर्घ्यं च पाद्यं च बृसी चेयं तवानघ।

शुचयः सक्तवश्चेमे नियमोपार्जिताः प्रभोः।  
प्रतिगृह्णीष्व भद्रं ते मया दत्ता द्विजोत्तमः॥11॥

इत्युक्त्वा तानुपादाय सक्तून्प्रादाद्विजातये।  
ततस्तुष्टोऽभवद्विप्रस्तस्य साधोर्महात्मनः॥12॥

प्रीतात्मा स तु तं वाक्यमिदमाह द्विजर्षभम्।  
वाग्मी तदा द्विजश्रेष्ठो धर्मः पुरुषविग्रहः॥13॥

शुद्धेन तव दानेन न्यायोपात्तेन यत्नतः।  
यथाशक्ति विमुक्तेन प्रीतोऽस्मि द्विजसत्तम॥14॥

ब्रह्मचर्येण यज्ञेन दानेन तपसा तथा।  
अगह्वरेण धर्मेण तस्माद्गच्छ दिवं द्विज॥15॥

तस्मिन्विप्रे गते स्वर्गं ससुते ससुषे तदा।  
भार्याचतुर्थे धर्मज्ञे ततोऽहं निःसृतो बिलात्॥16॥

ततस्तु सक्तुगन्धेन क्लेदेन सलिलस्य च।  
दिव्यपुष्पावमर्दाच्च साधोर्दानलवैश्च तैः।  
विप्रस्य तपसा तस्य शिरो मे काञ्चनीकृतम्॥17॥

ततो मयोक्तं तद्वाक्यं प्रहस्य द्विजसत्तमाः।।  
सक्तुप्रस्थेन यज्ञोऽयं सम्मितो नेति सर्वथा॥18॥

### शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

|                |   |                                                                                                                                                                                       |
|----------------|---|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| राजशार्दूल!    | - | हे नृपश्रेष्ठ!                                                                                                                                                                        |
| अश्वमेधे       | - | अश्वमेध यज्ञ में।                                                                                                                                                                     |
| निवृत्ते       | - | सम्पन्न होने पर।                                                                                                                                                                      |
| रुक्मपाश्वर्यः | - | सुवर्णमय बगल वाला/पाश्वर्भाग वाला।                                                                                                                                                    |
| अनघ!           | - | हे पापरहित!                                                                                                                                                                           |
| बिलशयः         | - | बिले शोते यः सः, बिल में रहने वाला।                                                                                                                                                   |
| उज्ज्वृत्ते:   | - | उज्ज्वेन वृत्तिर्यस्य सः, तस्य।                                                                                                                                                       |
|                |   | किसान द्वारा अपने खेतों से अन्न संगृहीत कर लेने पर वहाँ से छूटे हुए अनाज के दानों को चुन कर लाना और उन्हीं से आजीविका करना उज्ज्वृत्ति कहलाती है, इसी वृत्ति से आजीविका करने वाले के। |
| वदान्यस्य      | - | दानी के।                                                                                                                                                                              |

|                 |   |                                                                                                      |
|-----------------|---|------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| कापोतिः         | - | कपोतवृत्ति वाला, जिस प्रकार कबूतर इधर-उधर से जो कुछ मिल जाये उससे जीवनयापन करता है, वैसी वृत्तिवाला। |
| सस्नुषः         | - | पुत्रवधू सहित।                                                                                       |
| दुर्भिक्षे सति  | - | अकाल पड़ने पर।                                                                                       |
| दारुणे          | - | भयानक में।                                                                                           |
| यवप्रस्थम्      | - | एक प्रस्थ जौ (सेर भर)।                                                                               |
| सक्तून्         | - | सत्तुओं को।                                                                                          |
| कृतजप्याह्निकाः | - | कृतं जप्यम् आह्निकं च यैस्ते, वे जिन्होंने जप एवम् नित्यकर्म कर लिया हो।                             |
| हुत्वा          | - | हवन करके।                                                                                            |
| यथाविधि         | - | विधिम् अनतिक्रम्य, विधिपूर्वक।                                                                       |
| कुडवम्          | - | प्रस्थ का चतुर्थ भाग (पाव भर)।                                                                       |
| प्रहृष्टमनसः    | - | प्रहृष्टं मनो येषां ते, प्रसन्न मन वाले।                                                             |
| कुटीम्          | - | कुटिया (के अन्दर)।                                                                                   |
| क्षुधार्तम्     | - | भूख से पीड़ित।                                                                                       |
| अर्घ्यम्        | - | पूजनार्थ जल।                                                                                         |
| पाद्यम्         | - | पूजन के समय पादप्रक्षालनार्थ जल।                                                                     |
| बुसी            | - | आसन।                                                                                                 |
| नियमोपार्जिताः  | - | नियमपूर्वक प्राप्त।                                                                                  |
| प्रीतात्मा      | - | प्रसन्नचित्त वाला।                                                                                   |
| द्विजर्षभम्     | - | द्विजः ऋषभः इव तम्, श्रेष्ठ ब्राह्मण को।                                                             |
| वाग्मी          | - | श्रेष्ठ वक्ता।                                                                                       |
| पुरुषविग्रहः    | - | पुरुषस्य विग्रह इव विग्रहो यस्य सः पुरुष शरीर वाला।                                                  |
| न्यायोपात्तेन   | - | न्यायेन उपात्तं तेन, धर्मपूर्वक प्राप्त से।                                                          |
| यथाशक्ति        | - | शक्तिम् अनतिक्रम्य, सामर्थ्यानुसार।                                                                  |
| अगह्वरेण        | - | उत्तम।                                                                                               |
| दिवम्           | - | स्वर्ग (को)।                                                                                         |
| निःसृतः         | - | निकला।                                                                                               |
| सक्तुगन्धेन     | - | सत्तुओं की गन्ध से।                                                                                  |
| दानलवैः         | - | दान दिये हुए (सत्तुओं के कणों से)।                                                                   |
| प्रहस्य         | - | हँस कर।                                                                                              |
| सम्मितः         | - | तुल्य।                                                                                               |

## ❖ अभ्यासः ❖

### 1. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया देयानि

- (क) नकुलः कीदृशः आसीत्?
- (ख) बिलान्निष्क्रम्य नकुलः किं कथयति?
- (ग) उञ्छवृत्तिर्द्विजः कुत्र न्यवसत्?
- (घ) कपोतधर्मी द्विजः द्रव्यहीनः कथम् अभवत्?
- (ङ) यदा तस्य द्विजस्य परिवारः सक्तून् भोक्तुं प्रवृत्तः अभवत् तदा तत्र कः आगतः?
- (च) द्विजः सक्तून् कस्मै प्रादात्?

### 2. अधोऽङ्कितेषु सन्धिविच्छेदं दर्शयत

महदाश्चर्यम्, बिलान्निष्क्रम्य, उञ्छवृत्तेर्वदान्यस्य, भुङ्क्तेऽन्यस्मिन्, दानलवैश्च, क्षीणौषधिसमवायः।

### 3. अधो न्यस्तेषु सन्धिं कुरुत

तस्य + आहारः, यत् + अभूत् + विभो, उञ्छवृत्तिः + द्विजः, नियत + इन्द्रियः,  
ततः + अहम्, न्याय + उपात्तेन।

### 4. अधोऽङ्कितयोः श्लोकयोः स्वमातृभाषया अनुवादः कार्यः

- (क) सक्तुप्रस्थेन वो नायं यज्ञस्तुल्यो नराधिपाः।  
उञ्छवृत्तेर्वदान्यस्य कुरुक्षेत्रनिवासिनः।
- (ख) दिव्यपुष्पावमर्दाच्च साधोर्दानलवैश्च तैः।  
विप्रस्य तपसा तस्य शिरो मे काञ्चनीकृतम्।

### 5. 'सौवर्णो नकुलः' इत्यस्य पाठस्य सारांशः मातृभाषया लेखनीयः

### 6. रिक्तस्थानानि पूरयत

- (क) राजशार्दूल! ..... श्रूयताम्।
- (ख) अयं वः यज्ञः ..... तुल्यः नास्ति।
- (ग) पुरा उञ्छवृत्तिर्द्विजः ..... अभवत्।
- (घ) तदा क्षुधार्तम् ..... कुटीं प्रवेशयामासुः।
- (ङ) तस्य विप्रस्य तपसा मे ..... काञ्चनीकृतम्।
- (च) सक्तुप्रस्थेनायं ..... सम्मितो नास्ति।

## ❖ योग्यताविस्तारः ❖

- (क) **महाभारतम्** :- महर्षिव्यासप्रणीते महाभारतनामके महाकाव्ये लक्षाधिकाः श्लोकाः सन्ति। अस्मिन् महाकाव्ये अष्टादशपर्वणि सन्ति - आदिपर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराट्पर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व, आश्रमवासिकपर्व, मौसलपर्व, महा- प्रस्थानपर्व स्वर्गारोहणपर्व च।
- महाभारतम् वेदोत्तरकालिकाख्यानानां मतानां च विशालं भाण्डारं विद्यते। विषयस्यास्य व्यापकता अस्यान्तिमपर्वणः वचनेनानेन स्पष्टा भवति-

“यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।”

- (ख) **अश्वमेधयज्ञः** :- अश्वमेधयज्ञः प्राचीनकाले राज्यविस्ताराय राष्ट्रसमृद्धये च करणीयः यज्ञः आसीत्। अस्मिन् राज्ञां बलस्य पराक्रमस्य च परीक्षा भवति स्म। यज्ञकर्ता नृपः स्वराष्ट्रियप्रतीकमश्वं सैन्यबलैः सह भूमण्डलभ्रमणाय प्रेषयति स्म। यो नृपः स्वराज्ये समागतमश्वं निर्बाधं गन्तुं प्रादिशत् सः यज्ञकर्त्रे राज्ञे करदेयतां स्वीकरोतिस्म। यः तमश्वमरुणत् सः आश्वमेधिकनृपस्याधिनतां नाङ्गीकरोति स्म। तदा उभयोर्बलयोर्मध्ये युद्धं भवति स्म तत्रैव च नृपाणां पराक्रमः परीक्ष्यते स्म।

शतपथब्राह्मणे अश्वपदं राष्ट्रार्थं प्रयुक्तम् - ‘राष्ट्रं वै अश्वः’ इति।